सामाजिक संस्था संपूर्णा
(गैर सरकारी संगठन)
समग्र विकास की ओर अग्रसर

"आलेख"

कोरोना वायरस संक्रमण के इस चुनौती भरे दौर में सम्पूर्णा के परामर्शदाता निरंतर समाज सेवा में तत्पर

व्यथित हृदय को उपचार देने का काम भी समाज सेवा

—डॉ. शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

कोरोना वायरस संक्रमण के कारण तीसरे लॉकडाउन के चलते घर की चारदीवारी में बंद सारा परिवार एक साथ लंबे समय से साथ में समय गुजार रहा है। वहीं सामाजिक संस्था संपूर्णा द्वारा संकट के इस आपदाकाल में घरेलू समस्याओं के निदान के लिए संपूर्णा द्वारा संचालित परिवार परामर्श केंद्र अपनी सभी सेवाएं निरंतर दे रहा है।

21वीं शताब्दी में महिलाओं को उनकी शिक्षा, उनके अधिकार एवं सशक्तिकरण जैसे बहुत सारे विषयों में मीडिया प्रचार ने महिलाओं को नवचेतना का आभास कराया है। लेकिन कई बार ऐसा भी देखने में आया है कि यह जागरूकता केवल और केवल कुछ चुनिंदा महिलाओं में ही सिमट कर रह गई है। बहुत बड़े समाज ने इसको अभी स्वीकार ही नहीं किया है। यह बात स्पष्ट है कि प्रेम, किसी धर्म या जाति में नहीं मिलता। यह तो वह नैसर्गिक गुण है, जो अनायास ही किसी के भी हृदय को उमंग, प्रसन्नता और आनंद से भर देता है।

वर्तमान में महानगरों में रहने वाली महिलाओं की शिक्षा—दीक्षा और उनका पालन—पोषण खुले वातावरण में हो रहा है। परन्तु उन पर पहले ही की भांति शादी के बाद घर को संभालने की जिम्मेदारी भी आ पड़ती है। ऐसे में वह महिला अपने को दोहराए पर खड़ी पाती है। उसका मन बेचैन हो जाता है। और जाने अनजाने में यह भी कई बार देखने में आया है कि अपने

संस्कारों को दरकिनार कर उस बराबरी को पाना चाहती है, जो यथार्थ में कभी संभव ही नहीं है। ऐसे में यह प्रेम, ज्वाला और घृणा का रूप ले लेता है।और घरेलू हिंसा का जन्म होता है।

संपूर्णा के माध्यम से हमारी प्रोफेशनल/सुयोग्य परामर्शदाता दिन–रात परिवारों को परामर्श देने का कार्य कर रही हैं। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि अपने आसपास होती हुई घरेलू हिंसा को नजरअंदाज नहीं करें। आप एक अच्छे पड़ोसी का धर्म अवश्य निभाए। हो सकता है कि आपका उचित मार्गदर्शन एक व्यथित परिवार को आराम दे दे। यदि आपको लगता है कि आप इसके अंदर किसी भी प्रकार से हस्तक्षेप नहीं कर सकते तो आप बिना देरी किए संपूर्णा की परामर्शदाता श्रीमती पूजा गोयल एवं श्रीमती जया घोष को तुरंत मिल सकते हैं। मैं स्वयं तो आपकी सेवा में सदैव ही तत्पर हूं।

मैं बताना चाहूंगी कि घायल और व्यथित हृदय की प्रेम भरे शब्दों से ही मरहम पट्टी की जा सकती है। लंबे समय तक बीमार मन, कैंसर जैसी महाबीमारी को जन्म दे सकता है। अतैव हम सबको किसी भी व्यथित हृदय को उपचार देने का काम भी समाज सेवा ही माननी चाहिए। जिस प्रकार से चारों और आक्रोश, हिंसा, भय, चिंता का वातावरण है। इसमें केवल और केवल आप के मुख से निकले हुए प्रेम पूर्वक शब्द ही कारगर सिद्ध हो सकते हैं।

मैं सच कहती हूं कि इसमें ना किसी डिग्री की आवश्यकता है। ना बहुत पढ़े लिखे हुए की आवश्यकता है। केवल एक सरल हृदय होने की आवश्यकता है। क्योंकि इसका संबंध केवल पढ़ाई लिखाई से होता तो संभ्रांत, संपन्न और पढ़े–लिखे परिवारों में घरेलू हिंसा के मामले इतने अधिक नहीं होते। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि हर किसी से प्रेम से बोलो।

————————————————————————————